पुष्करमुनि स्मृति ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९२००८)

मुख्य टाइटल
समर्पण
स्वकीय
प्रकाशकीय
सम्पादक की कलम से
सन्देश
त्रिदिवसीय विराट् आयोजन – स्मृतिग्रन्थ का लोकार्पण
अनुक्रमणिका
खण्ड-१

श्रद्धा का लहराता समन्दर (गद्य) ---------- १-१६२
मेरे श्रद्धा लोक के देवता ----------३
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के धनी ---------- ५
उपाध्याय पुष्कर मुनि जी ---------- ६
पुष्कर पराग ---------- ६
सौरभ का समुद्र ---------- ७
हे श्रमण श्रेष्ठ, हे ज्ञानधाम ---------- ७
साधना के शिखर पुरुष ----------८
श्रद्धा पुष्पाञ्जलिः ----------८
युग पुरुष उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि ---------- ९
यथा नाम तता गुणाः---------- १०
प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी ---------- ११
सरलता ही साधुता का भूषण है ---------- ११
गरिमामय सन्त थे ---------- ११
हम सब उनके ऋणी रहेंगे ---------- ११
एक अपूरणीय क्षति ----------१२
जितने महान, उतने ही विनम्र ----------१२
आपका आशीर्वाद मेरे साथ ----------१२
जन-जन के पूज्य उपाध्याय श्री ----------१३
अतीत के संस्मरण ----------१३
बहुआयामी व्यक्तित्व ---------- १४
श्रद्धा-सुमन ---------- १६
कल्पवृक्ष मुनिराज थे ---------- १७
बहुगुणी-बहुश्रुत उपाध्यायश्री ----------१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोशनी बाकी है ---------- १९
विराट् व्यक्तित्व के धनी ---------- १९
उपाध्यायश्री का जीवन ---------- २०
समत्वभाव के साधक ----------२१
संत शिरोमणि उपाध्यायश्री ----------२१
उपाध्यायश्री प्रबल पुण्यवान थे ----------२१
गुरु की श्रद्धा मेरी श्रद्धा ---------- २२
संघ के भीष्म पितामह ---------- २४
ध्यान-जप साधक ---------- २४
गौरवमय संत जीवन ---------- २४
महकता गुण गुलदस्ता ---------- २४
महान् कलाकार – पूज्य गुरुदेवश्री ---------- २५
महान संत का महाप्रयाण ---------- २५
श्रद्धा के दो सुमन ---------- २६
जैन पुष्क तीर्थ ---------- २६
एक महान् क्षति है ---------- २९
अद्भुत योगी उपाध्याय श्री ---------- २९
दिव्य साधक-उपाध्याय प्रवर ---------- ३०
महकता पुष्प ----------३१
मेरे आराध्य देव थे ---------- ३२
सद्गुरु की महिमा अनन्त ---------- ३३
श्रद्धा भरा प्रणाम ---------- ३४
शत-शत नमन ---------- ३४
पुष्करत्व के प्रतीक-उपाध्यायश्रीजी ---------- ३५
एक मधुर संस्मृति ---------- ३६
एक आकर्षक व्यक्तित्व ---------- ३६
अध्यात्मसिद्ध योगी-उपाध्यायश्री ---------- ३७
अनन्त आस्था के केन्द्र ---------- ३९
मेरा भी सविनय वन्दन ---------- ३९
कितने महान् थे गुरुदेव---------- ३९
श्रद्धा की पुष्प पंखुड़ियाँ ---------- ४०
आध्यात्मिक जगत् के सूर्य ---------- ४१
युग पुरुष को शत शत नमन ---------- ४२
अद्भुत व्यक्तित्व और कृतित्व ---------- ४२
मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि ---------- ४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्भुत आकर्षक व्यक्तित्व के धनी ---------- ४५
श्रद्धा के इन कणों में ---------- ४६
ज्योतिर्मय महादीप ---------- ४६
श्रद्धार्चना ---------- ४७
आस्था की अकम्प लौ उपाध्यायश्री ---------- ४७
आराध्य गुरुदेवश्री ---------- ४८
श्रमण संघ का सितारा---------- ४८
संयम प्रदाता सद्गुरुवर्य ---------- ४९
गुणों के पुँज गुरुदेव ---------- ४९
प्रेरणा के पावन स्रोत ---------- ५०
तप-त्याग और संयम के सुमेरु ---------- ५०
सरलता की साकार मूर्ति सद्गुरुदेव ---------- ५१
मेरे आराध्य गुरुदेव---------- ५१
सिद्ध जपयोगी उपाध्याय पूज्य गुरुदेव ---------- ५३
तप और त्याग के साकार रूप ---------- ५३
संयम के सुमेरु ---------- ५४
आध्यात्मिक पुरुष ---------- ५४
एक ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी ---------- ५५
धर्म के जीते जागते रूप ---------- ५५
जीवन-निर्माता सद्गुरुदेव ---------- ५६
इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व के धनी ---------- ५७
विद्या औऱ विनय से संपन्न ---------- ५८
सच्चे युग पुरुष ---------- ५८
शीर्षस्थ सन्त रत्न ---------- ५९
कोहिनूर हीरे की तरह चमकता व्यक्तित्व ---------- ६०
ध्यानयोगी ---------- ६०
सद्गुणों का महकता मधुवन ---------- ६१
वे दिव्यात्मा ---------- ६२
अप्रतिम सूर्य का महाप्रयाण ---------- ६२
महान् आत्मबली साधक ---------- ६२
उपाध्यायश्री को मेरा नमन ---------- ६३
परमाराध्य उपाध्यायश्री ---------- ६४
नमो उवज्झायाणं---------- ६४
श्रमण संस्कृति के महान् सन्त ---------- ६५
धर्म ध्येय के विराट धनी ---------- ६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महापुरुषों की विराट् गौरव गाथा ---------- ६५
मेरी मानस-धरती पर अंकित गुरुदेव ---------- ६६
सफल जीवन की निशानी ---------- ६८
एक आदर्श जीवन ---------- ६९
आध्यात्मिक साधक ---------- ६९
सरस्वती पुत्र-गुरुदेवश्री ---------- ७१
विनय और विवेक के शाश्वत सरोवर ---------- ७१
निष्कलंक-जीवन ---------- ७१
ज्योतिर्मय साधक ---------- ७२
साधक और सर्जक ---------- ७२
संयम पथ के महाधनी ---------- ७३
ज्ञान के प्रकाश स्तम्भ ---------- ७४
गुरुदेव का महाभिनिष्क्रमण ---------- ७५
फूल चला गया, सुगंध रह गई ---------- ७५
दीप स्तंभ उपाध्यायश्री ---------- ७५
णमो उवज्झायाणं-एक स्मृतिचित्र ---------- ७६
उपाध्याय पुष्कर-बूँद में समाया सागर ---------- ७७
चमकता तारा टूट गया ---------- ७८
आस्था की ज्योति उपाध्यायश्री ---------- ७८
श्रमण-संघ के सत्यनिष्ठ सन्तरत्न ---------- ७९
पुष्करणी में पुष्कर खिल गया ---------- ७९
जानहू संत अनंत सामना ---------- ८०
कृतज्ञता के दो बोल ---------- ८०
महकता पुष्प ---------- ८२
अमूल्य हीरा खो दिया ---------- ८२
योगीश्वर ---------- ८३
ओ पुष्कर गुरुदेव प्यारा ---------- ८३
संयम के क्षण-क्षण को नमन ---------- ८४
मेरे उपकारी गुरुदेव ---------- ८४
वे नर रत्न थे---------- ८४
मंगलमूर्ति पूज्य श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. ---------- ८५
सफळ शिल्पी गुरुदेव ---------- ८५
आदरंजालि ---------- ८६
जिसने पुष्कर को पाया ---------- ८६
यह समाचार भी दुःखदायी है ---------- ८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनीषी सन्त रत्न ---------- ८६
साधना पथ के अमर साधक ---------- ८७
एक विशिष्ट विभूति ---------- ८८
एक सितारा अस्त हो गया---------- ८८
धर्म सृष्टि के दिव्य पुष्प ---------- ८८
वे यशःशरीर में विद्यमान हैं ---------- ८९
अविस्मरणीय संस्मरण ---------- ८९
वे एक प्रयाग तीर्थ थे ---------- ८९
भावांजलि ---------- ९०
प्रभावी सन्त ---------- ९०
सहज सरल जीवन के धनी ---------- ९०
एक प्रबुद्ध सन्त ---------- ९०
दया के देवता ---------- ९०
उत्कृष्ट साधक थे ---------- ९१
वे समर्थ साधक थे ---------- ९१
श्रद्धा सुमन ---------- ९१
महान् अध्यात्योगी ---------- ९२
साधना के अमृत कलश ---------- ९३
वे आदर्शों में जीवन्त हैं ---------- ९३
स्नेहमूर्ति उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी ---------- ९३
श्रुत सम्पन्न भी, शील सम्पन्न भी ---------- ९४
अद्भुत करम-अद्भुत धरम ---------- ९४
अन्तर्मुखी महापुरुष ---------- ९५
जीवन दृष्टा सन्त ---------- ९६
साधक पुरुष ---------- ९७
मौत को चुनौती देने वाले वीर पुरुष ---------- ९७
समन्वयशील विचारक ---------- ९७
स्वाध्याय के अखण्ड ज्योतिर्धर ---------- ९८
असाधारण व्यक्तित्व के पुरोधा ---------- ९८
बेजोड़ इतिहास का सृज कर गये ---------- ९९
तीर्थ गुरु पुष्कर ---------- ९९
मेरी ध्यान साधना के गुरुवासरः ---------- १००
मेरी प्रगति-गहुरुदेव का आशईर्वाद---------- १००
कमल सम निर्लिप्त ---------- १०१
परम उपकारी गुरुदेव ---------- १०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावभीनी श्रद्धार्चना ---------- १०३
महान् संत उपाध्यायश्री ---------- १०३
कोटि कोटि वन्दन अभिनन्दन ---------- १०४
ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी ---------- १०५
गौरव गरिमामय मंडित व्यक्तित्व ---------- १०५
उनके सद्गुण हमारे मार्गदर्शक होंगे ---------- १०६
अभिभूत हैं उनके सारात्य से ---------- १०६
चमत्कारी मंगल पाठ था ---------- १०७
धर्म के जीवन्त रूप थे ---------- १०८
सम्मेलन के महारथी थे ---------- १०८
ध्यान-मौन साधना के प्रबल पक्षधर थे ---------- १०८
विलक्षण व्यक्तित्व के धनी ---------- १०९
वंदऊ गुरुपद पदुम परागा ---------- १०९
सरलता और सोहार्द का पावन प्रतीक ---------- ११०
गुरुदेव सागर की तरह विराट् थे ---------- १११
महान् संत ---------- १११
कर्मयोगी एवं तपःपूत उपाध्यायश्रीजी ---------- १११
कितने महान्, कितने सरल ----------११२
वे दृढ़ संकल्पशील थे ----------११२
आध्यात्मिक ज्ञान के सागर ----------११३
अमर नाम हो गया ----------११३
श्री पुष्कर मुनि जी ----------११३
शताब्दी के अद्भुत संत श्री पुष्कर मुनि ----------११३
एक युग पुरुष ---------- ११४
तीर्थों में तीर्थ पुष्कर, सन्तों में संत पुष्कर ---------- ११४
दश्रद्धा सुमन ---------- ११५
विनम्र श्रद्धांजलि ---------- ११५
सद्गुणों का महकता हुआ गुलदस्ता ---------- ११५
माला का एक मोती ---------- ११६
हम पर उनके अनन्त उपकार हैं ---------- ११७
उपाध्यायश्री विश्व-मैत्री के प्रतीक थे ---------- ११७
हे सौम्य मूर्ति शत-शत प्रणाम ---------- ११७
अवर्णनीय उपकार है ---------- ११७
जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र ----------११८
उनका नाम ही गुणों का पर्याय ----------११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्भुत लोक प्रिय सन्त ----------११८
गुरुवर गये सही, पर मिटे नहीं----------११८
असहनीय दुःख ----------११८
हार्दिक श्रद्धांजलि ---------- ११९
नाम के अनुरूप थे वे---------- ११९
जैसे सूर्य अस्त हो गया ---------- ११९
अमर व्यक्तित्व के धनी थे वे ---------- ११९
मुझ पर उनकी कृपा दृष्टि थी ---------- ११९
श्रद्धा सुमन ---------- ११९
अनन्त सद्गुणओं के पुञ्ज ---------- १२०
उनकी स्मृति को शत-शत नमन ----------१२१
समाज और संस्कृति के प्रहरी ----------१२१
जप ध्यान साधना के अद्भुत धनी ---------- १२२
प्रेरणा के पावन प्रतीक ---------- १२३
भावभीनी श्रद्धार्चना ---------- १२३
सत्य के तेज पुंज थे वे ---------- १२४
भावभीनी वन्दना ---------- १२४
सरलता के ज्योतिर्मय रूप थे वे ---------- १२५
जीवन शिल्पी गुरुदेव ---------- १२५
परम उपकारी थे गुरुदेव ---------- १२५
कोटि-कोटि वंदन ---------- १२६
तेजस्विता का ज्वलन्त उदाहरण ---------- १२६
श्रद्धा के दो पुष्प---------- १२७
गुरुदेव संघ के गौरव थे ---------- १२७
गुणपुंज गुरुदेव के चरणओं में ---------- १२८
कोटि-कोटि अभइनन्दन-वन्दन ---------- १२८
सद्गुणों के पुंज गुरुदेवश्री ---------- १२९
सच्चे जंगम तीर्थ-पुष्कर मुनि जी ---------- १२९
निस्पृह संत ---------- १३०
श्रमण संघ के वरिष्ठ संत ----------१३१
असीम उपकारी गुरुदेवश्री ----------१३१
महान् व्यक्तित्व के धनी ----------१३१
संगठन के प्रबल समर्थक थे गुरुदेव ---------- १३२
आगम व दर्शन के गंभीर ज्ञाता ---------- १३२
गुरुदेव सहास के रूप थे ---------- १३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुवर प्रतिभासम्पन्न विभूति थे ---------- १३३
प्रेरणा के पावन स्रोत ---------- १३४
गुरुदेव की महिमा अपरम्परा ---------- १३४
महान् उपकारी तेजस्वी सन्त ---------- १३५
गुरुदेव सिद्ध जपयोगी थे ---------- १३५
दिव्य और भव्य जीवन था उनका ---------- १३५
आलोक स्तम्भ गुरुदेवश्री पुष्करर मुनिजी ---------- १३६
महान् मेधावी तेजस्वी संतरत्न ---------- १३७
भावांजलि ---------- १३८
सरल और स्पष्ट वक्ता संत ---------- १३८
कितने महान् थे गुरुदेव---------- १३९
वे युग पुरुष थे ---------- १४०
एक चमकता दमकता जीवन ----------१३१
संयम के अवतार-उपाध्याय श्री ---------- १४१
सद्गुरु एक आध्यात्मिक शक्ति हैं ---------- १४१
श्रद्धा के दो पुष्प---------- १४२
बहुआयामी औ बहुमुखी प्रतिभा के धनी ---------- १४२
जगमगाते सूर्य-गुरुदेवश्री ---------- १४३
दया के देवता-गुरुदेवश्री ---------- १४३
शिखर पुरुष-उपाध्याय गुरुदेव ---------- १४४
साधना के सर्वोच्च शिखर थे गुरुदेव ---------- १४४
सफल सिद्ध जपयोगी थे गुरुदेव ---------- १४४
त्याग, वैराग्य, संयम-लसाधना के जंगम तीर्थ ---------- १४४
विविध विशेषताएँ ---------- १४५
भक्तों के भगवान ---------- १४५
कितने महान् थे गुरुदेव---------- १४५
तीन पीढ़ियों की सेवा ---------- १४६
निष्पृह गुरुदेवश्री ---------- १४६
स्नेह और सद्भावना के पावन प्रतीक---------- १४७
समन्वय परंपरा के स्थापक ---------- १४८
सभी मनोरथ सिद्ध हुए ---------- १४८
साधऩा पथ के अविश्रान्त पथिक ---------- १४९
संघ और राष्ट्र के प्राण ---------- १४९
महामानव उपाध्यायश्री ---------- १४९
अध्यात्मयोगी चला गया ---------- १५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपाध्यायश्री का महाप्रयाण ---------- १५१
अध्यात्मयोगी थे ---------- १५२
जप की पावन ज्योति के चरणों में---------- १५२
प्रतापपूर्ण प्रतिभा के धनी-सद्गुरुदेव ---------- १५३
जीवन के सफल कलाकार---------- १५४
सम्यक् ज्ञान पुंज ---------- १५५
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी ---------- १५५
शत-शत वंदन ---------- १५६
मेरा दर्द मिट गया ---------- १५७
सत्यान्वेषी गुरुदेवश्री ---------- १५८
अपूर्व थी जप निष्ठा ---------- १५९
वे सिद्ध जपयोगी थे ---------- १५९
एकता के पक्षधर थे ---------- १६०
मेरे दादा गुरुदेव ---------- १६०
गुरुदेव का जीवन बड़ा चमत्कारी था ---------- १६०
आत्म विज्ञानी संत थे ---------- १६०ए
पुरुषार्थ के प्रेरक सूत्र ---------- १६०ए
मेरे महागुरु ---------- १६०ए
प्रतिपल जागरूक जीवन ---------- १६०बी
अद्भुत थी प्रवचन कला ---------- १६०बी
श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन ---------- १६०सी
शत शत वन्दन ---------- १६०डी
उपाध्याय श्री पुराने चावल थे ---------- १६०डी
दिव्यदृष्टि के धनी ---------- १६१
हे पुष्कर गुण धाम ---------- १६२
काव्य-कानन की कलियाँ ---------- १६३-२१०
श्री पुष्करमुनिस्तव-पञ्चकम् ---------- १६३
सिरिपुक्खरस्सुई ---------- १६३
श्रद्धा-सुमन ---------- १६६
कोटि कोटि वन्दन-अभिनन्दन ---------- १६६
हे उपाध्याय पुष्कर मुनिजी ---------- १६७
कथं हृतं रत्नमिदं ---------- १६७
भाव-सुमन ---------- १६८
गुरु तुमने उपकार किया है ---------- १६८
श्रद्धासुमन ---------- १६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हन्त, हन्त सुरलोक सिधारे ---------- १६९
गुरु उपकारी हैं ---------- १७०
इक थे जगमग जैन सितारे ---------- १७०
शत-शत वन्दन है गुरु पुष्कर ---------- १७३
सन्त वे मशहूर हैं ---------- १७४
योगिराज श्री पुष्कर गुरु ---------- १७४
श्रद्धांजलि पुष्प समर्पित ---------- १७५
श्रद्धापुष्प ---------- १७५
महाविद्वान् महागुणी ---------- १७७
भावाञ्जलि ---------- १७८
हे ज्योतिर्धर ---------- १७८
उपाध्याय पुष्कर मुनि प्यारे---------- १७९
श्रद्धा सुमन ---------- १७९
शत शत वन्दन ---------- १७९
पुष्कर गुच्छखम्---------- १८०
गुरु तेरा नाम रहेगा ----------१८१
फिर तेरी कहानी याद आई ----------१८१
श्रद्धांजलि ----------१८१
बड़े उपकारी हो ---------- १८२
श्रद्धांजलि सुमन ---------- १८२
श्रद्धार्चन ---------- १८२
दिव्य दोहा द्वादशी ---------- १८३
श्रद्धा पुष्पांजलि ---------- १८३
श्री पुष्कर गुरु-महिमा ---------- १८४
मन पुष्कर से अविभाज्य रहे ---------- १८६
विनम्र प्रणामाञ्जलि ---------- १८७
श्रमण संघ की शान ---------- १८७
पुष्कर मुनीनाम् स्मृति-स्तोत्रम् ---------- १८८
हे महामुनि ---------- १९४
श्रद्धांजलि गीत ---------- १९५
पुष्कर ज्योति ---------- १९५
युग-पुरुष, तुम्हें शत शत वन्दन ---------- १९६
श्रद्धांजलि ---------- १९६
उज्ज्वल दिव्य सितारे थे ---------- १९७
गुरुदेव पुष्कर प्यारा ---------- १९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्तुति-पञ्चविंशतिका ---------- १९८
निर्झर बना महासागर ---------- २००
चमकते इक सितारे थे ---------- २००
जगत् हितार्थ श्री पुष्कर मुनि ---------- २०१
हे गुरुदेव---------- २०१
श्रद्धा-सुमन ---------- २०२
पुष्कर परम पुनीत ---------- २०२
ज्योतिर्मय जीवन तिरोहित हो गया ---------- २०३
पुष्कर मुनि की पुरवाई ---------- २०६
गुरु पुष्कर दीन-दयाला ---------- २०७
आपकी सदा जय हो ---------- २०८
श्रद्धांजलि प्रीति-पुष्प ---------- २०८
राज के उद्गार ---------- २०९
मेरा मस्तक सदा झुका है ---------- २१०

खण्ड-२

तल से शिखर तक ---------- २११-२७६
मंगलम् ---------- २१३
अक्षयवट का प्रस्फुरण ---------- २१४
साधना-शिखर का यात्री ---------- २१८
राजहंस की ऊँची उड़ान ---------- २२१
शिक्षा, सेवा, साधना के ज्योति स्तम्भ ---------- २२५
सद्गुणों के शान्त शतदल ---------- २२८
हिमशिला पर अंगारे ---------- २३०
श्री ज्येष गुरु जाप ---------- २३३
आध्यात्मिक साधना-उपलब्धियाँ व चमत्कार ---------- २३४
संगठन के सजग प्रहरी ---------- २३७
शिखर समागम ---------- २४०
चलते चलो अकेले राम, किसने बाँधा हैं आकाश ---------- २४९
अभिनन्दन ग्रन्थ का समर्पण ---------- २५२
पूना-श्रमण सम्मेलन ---------- २५३
चातुर्मास तालिका ---------- २५५
टिम-टिम करते तारे ---------- २५६
संगठन के सजग प्रहरी ---------- २६०
महोत्सव और महोत्सव ---------- २६४

संस्मरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केसर की वर्षा ---------- २६७
कितने मिलनसार, कितने भले ---------- २६७
साधुता के पर्याय ---------- २६९
अध्यात्म यात्रा स्मृतियाँ ---------- २७२
खण्ड-३ - वाग् देवता का दिव्य रूप ---------- २७७-४१८
गुरुदेवश्री की साहित्य स्रोतस्विनी ---------- २७९
जैन कथा वाङ्मय का अमृत मन्थन ---------- २९५
जैन कथाएँ भाग १ से १११ तक में आये हुए प्रमुख पात्रों केनाम व आधार ग्रंथों की सूचनिका ---------- २९८
कथा कानन की कलियाँ ---------- ३१३-३३१
प्रवचन पंखुडियाँ ---------- ३३२-३७१
काव्य-सुमन की सौरभ ---------- ३७२-३७९
गुरुदेवश्री की संस्कृत रचनाएँ ---------- ३७४-३७८
जिज्ञासाएँ और समाधान प्रश्नोत्तर – साध्वी श्री पुष्पवतिजी ---------- ३८०
श्रावक धर्म दर्शन-एक अनुशीलन – श्री दिनेश मुनि ---------- ३८३
धर्म का कल्पवृक्ष-जीवन के आँगन में – साध्वी श्री पुष्पवतिजी ---------- ३९०
जैन धर्म में दान-एक समीक्षात्मक अध्ययन – महासती रत्नज्योतिजी ---------- ३९६
ब्रह्मचर्य विज्ञान-एक समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ. तेजसिंह गौड़ ---------- ४०३
उपाध्यायश्री रौ राजस्थानी साहित्य – डॉ. नृसिंह राजपुरोहित ---------- ४०९
दान का विश्वकोष-जैन धर्म में दान – डॉ. राकेश गुप्त ---------- ४११
पुष्करिणी निष्यन्द – डॉ. नागरमल सहल ---------- ४१३
पुष्कर सूक्ति कोश-एक दृष्टि – डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया ---------- ४१७
खण्ड-४ – इतिहास की अमर बेल ---------- ४१९-४९०
युगप्रवर्तक क्रांतिकारी आचार्य श्री अमरसिंह जी म. व्यक्तित्व और कृतित्व ---------- ४२१
हमारे ज्योतिर्धर आचार्य ---------- ४३६
आचार्य प्रवर श्री सुजानमलजी महाराज ---------- ४३८
आचार्य श्री जीतमल जी महाराज-व्यक्तित्व दर्शन ---------- ४३८
महामहिम आचार्य पूज्य श्री ज्ञानमलजी महाराज ---------- ४४३
आचार्य श्री पूनमचन्दजी महाराज ---------- ४४४
अध्यात्मयोगी सन्त श्रेष्ठ श्री ज्येष्ठमलजी महाराज ---------- ४४८
महास्थविर श्री ताराचन्दजी महाराज ---------- ४५२
श्रमण संघ-एक चिन्तन ---------- ४५९
जैनागम महोदधि के प्रकांड व्याख्याता – आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज ---------- ४६१
विविध विशेषताओं के संगम-आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषि जी म. ---------- ४६१
प्रज्ञा पुरुष आचार्य प्रवर श्री देवेन्द्र मुनिजी ---------- ४६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुज्य उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी का शिष्य परिवार (श्रमण) ---------- ४७७
पूज्य उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी का शिष्या परिवार (श्रमणियाँ) ---------- ४८०
खण्ड-५ – अध्यात्म साधना के शाश्वत स्वर ---------- ४९१-५५४
अनेकता में एकता ही अनेकान्त है – आचार्य विजयइन्द्रदिन्नसूरिजी ---------- ४९३
सत्य की खोज – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन ---------- ४९४
जैन दर्शन में काल की अवधारणा – डॉ. वीरेन्द्रसिंह ---------- ४९६
ध्यानयोग-दृष्टि और सृष्टि – स्वामी अनन्त भारती ---------- ४९६
जपयोग साधना – विमलकुमार चोरड़िया ---------- ५०५
अपरिग्रह से द्वंद्व विसर्जन-समतावादी समाज रचना – मुनि प्रकाशचन्द्र - निर्भय ---------- ५०८
मानव-संस्कृति के विकास में श्रमण संस्कृति (जैन धारा) की भूमिका – डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन ---------- ५१३
कर्म चक्र के सिद्ध चक्र – डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया ---------- ५२१
कर्म से निष्कर्म – जैन दर्शन का कर्म सिद्धान्त – डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल ---------- ५२३
जैन दर्शन का मनोविज्ञान-मन और लेश्या के संदर्भ में – डॉ. राजीव प्रचंडिया ---------- ५३१
अनेकान्त रूप-स्वरूप – डॉ. राजबहादुर पांडेय ---------- ५३५
व्यक्तित्व के समग्र विकास की दिशा में जैन शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता - श्रीचन्द सुराना ---------- ५३७
साधुचर्या की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावलि अर्थ और अभिप्राय – डॉ. अलका प्रचंडीया -------- ५४५
जैन मंत्र योग – श्री करणदीन सेठिया ---------- ४५९
हाँ, मैं जैन हूँ – श्री परिपूर्णानन्द वर्मा ---------- ५५२
खण्ड-६ – जन मंगल धर्म के चार चरण ---------- ५५५-६३२
पर्यावरण रक्षा और अहिंसा – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी ---------- ५५७
पर्यावरण परिरक्षण-अपरिहार्य आवश्यकता – डॉ. हरिशचन्द्र भारतीय ---------- ५६०
जैन धर्म और पर्यावरण-सन्तुलन – मुनि श्री नेमिचन्दजी ---------- ५६४
पर्यावरण-प्रदूषण-बाह्य और आन्तरिक – श्री विनोद मुनिजी ---------- ५७४
पर्यावरण-प्रदूषण और जैन दृष्टि – डॉ. सुषमा ---------- ५७८
पर्यावरण के संदर्भ में जैन दृष्टिकोण – डॉ. शेखरचन्द्र जैन ---------- ५८३
बढ़ता प्रदूषण एवं पर्यावरणीय शिक्षा – डॉ. हेमलता तलसेरा---------- ५८७
कैसा हो हमारा आहार – आचार्य राजकुमार जैन ---------- ५९०
शाकाहार है संतुलित आहार – डॉ. नेमिचन्द जैन ---------- ६००
स्वास्थ्य रक्षा का आधार-सम्यग् आहार-विहार – सुशीला देवी जैन ---------- ६०४
भगवान् महावीर महात्मा गाँधी की भूमि पर पढ़ते कत्लखाने – श्री यशपाल जैन ---------- ६०७
अण्डा-उपभोग-स्वास्थ्य या रोग – साध्वी श्री पुष्पवतिजी ---------- ६१०
तम्बाकू एक-रूप अनेक – उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि ---------- ६१३
माँसाहार या व्याधियों का आगार – उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि ---------- ६१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाकाहारी अण्डा-एक वंचनापूर्ण भ्रान्ति – आचार्य देवेन्द्र मुनि ---------- ६२१
सुखी जीवन का आधार-व्यकसन मुक्ति – डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया ---------- ६२३
भूकम्प कैसे रोका जाये – मानिकचन्द नवलखा ---------- ६२५
जीवन के काँटे-व्यसन – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि ---------- ६२६
स्वस्थ समाज का आधार-सदाचार – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि ---------- ६३०
खण्ड-७ – संथारा-संलेषणा-समाधिमरण की कला ---------- ६३३-६६४
संथारा, संलेषणा-एक चिन्तन – आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि ---------- ६३५
संलेषणा-संथारा के कुछ प्रेरक प्रसंग – उपाध्याय श्री केवल मुनि ---------- ६५६
जैन दर्शन में संथारा – डॉ. रज्जनकुमार ---------- ६६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org